अप्रैल 2026, वर्ष - 01, अंक - 04

मेधा

E-Magzine(Monthly)

स्वप्न, सृजन और सम्भावनाओं की पत्रिका

आवरण चित्र: सुइता मण्डल, बी.ए. षष्ठम सेमेस्टर

संरक्षक/प्राचार्य

प्रो.अवधेश नारायण सिंह

सम्पादक

डॉ.राजेश कुमार सिंह

सरदार भगत सिंह राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रुद्रपुर
ऊधम सिंह नगर, उत्तराखण्ड

अप्रैल 2026, वर्ष- 01, अंक- 04

मेधा

E-Magzine (Monthly)

स्वप्न,सृजन और सम्भावनाओं की पत्रिका

संरक्षक/प्राचार्य

प्रो. अवधेश नारायण सिंह

सम्पादक

डॉ. राजेश कुमार सिंह

युवा सम्पादक मण्डल

****

सहायक सम्पादक

तनीशा चावला
नेपोलियन

साहित्य सम्पादक

अनामिका सिंह
शुवांशु बिष्ट
कैलाश चौधरी

समाचार सम्पादक

सालेहा खातून
दिया टाकुली
कुमकुम मिश्रा

क्रीड़ा सम्पादक

सरिता बिष्ट

कला सम्पादक

सुइता मण्डल

अप्रैल 2026, वर्ष- 01, अंक- 04

मेधा

E-Magzine (Monthly)

स्वप्न,सृजन और सम्भावनाओं की पत्रिका

एस.बी.एस. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रुद्रपुर
SBS GOVT. POST GRADUATE COLLEGE RUDRAPUR
1974

भीतर के पन्नों में

****

01- प्राचार्य का संदेश — पृष्ठ संख्या: 04
02- सम्पादक की कलम से — पृष्ठ संख्या: 05
03- They Said 'Nothing Happens Here' - Anamika Singh — पृष्ठ संख्या: 06-07
04- वृद्ध हैं विरासत - नेपोलियन — पृष्ठ संख्या: 08
05- आधुनिकता बनाम परम्परा - रश्मि तिवारी — पृष्ठ संख्या: 09-11
06- Life between Milestones - Manya Khurana — पृष्ठ संख्या: 12-13
07- भोजन की कीमत - कैलाश चौधरी — पृष्ठ संख्या: 14
08- मित्रता - प्रेम विश्वास — पृष्ठ संख्या: 15
09- Education without Execution - Tarandeep Kaur — पृष्ठ संख्या: 16-19
10- सोशल मीडिया: दोस्त या दुश्मन - प्रीति मेहरा — पृष्ठ संख्या: 20-21
11- Alumnae Corner — पृष्ठ संख्या: 21
12- महाविद्यालय का अक्षयवट - कुमकुम मिश्रा — पृष्ठ संख्या: 22-23
13- When War Speaks-Peace Falls Silent - Tannu Goyal — पृष्ठ संख्या: 24-25
14- समय बदल गया है - संगीता — पृष्ठ संख्या: 26
15- एक स्त्री होकर भी कहाँ - देवकी — पृष्ठ संख्या: 27
16- उड़ने दो ख़्वाबों को आजाद खुली हवा में - पूजा रस्तोगी — पृष्ठ संख्या: 28
17- Book Review: The Deschooling Society - Napoleon — पृष्ठ संख्या: 29-32
18- अपनी जिम्मेदारी समझें युवा - सोफिया अंजुम — पृष्ठ संख्या: 32
19- कैम्पस क्रॉनिकल — पृष्ठ संख्या: 33-47

****

प्राचार्य का संदेश

"ज्ञान ही शक्ति और रचनात्मकता इसकी कुंजी है ।"

महाविद्यालय मासिक पत्रिका 'मेधा' का यह अंक हमारे विद्यार्थियों के समर्पण और कड़ी मेहनत का परिचायक है। प्रत्येक महीने इस पत्रिका का आना महाविद्यालय में नई ऊर्जा और उत्साह का संचार करता है। यह हमें प्रत्येक महीने याद दिलाती है कि हम एक ऐसे माहौल में हैं, जहाँ शिक्षा के साथ-साथ शिक्षा से सम्बन्धित प्रत्येक रचनात्मक, कलात्मक एवं विकासात्मक गतिविधियों का सम्मान होता है। मेरा ऐसा मानना है कि शिक्षा एक संयुक्त उद्यम है, जिसमें माता-पिता, शिक्षक, प्राचार्य तथा विद्यार्थी- प्रत्येक बदलाव के लिए एक समान रूप से भागीदार हैं।

मेरा हमेशा ऐसा दृढ़ विश्वास रहा है कि जो लोग मेहनती, समर्पित, और अनुशासित जीवन का आनंद उठाते हैं, उन्हें दिव्य संतुष्टि के रूप में भरपूर आनंद मिलता है। वर्तमान महाविद्यालय में जब से मैंने कार्यभार ग्रहण किया है, अपने छात्रों, कर्मचारियों एवं शिक्षकों को लेकर आगे बढ़ने एवं सुसंगठित रूप से कक्षाएँ संचालित करने का मेरा निरंतर प्रयास रहा है। यह मुझे सदा से सबसे अधिक फायदेमंद लगता है।

महाविद्यालय की मासिक पत्रिका 'मेधा'; महाविद्यालय परिवार को हर पल जागरूक और सतर्क रहने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर रही है । मैं इस पत्रिका के सम्पादक, छात्र-छात्रा सम्पादक मंडल तथा छात्र संघ के समस्त पदाधिकारियों को हृदय से बधाई देता हूँ, जिन्होंने इस कार्य के सम्पादन में निरंतर योगदान दिया है।

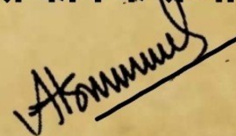

(प्रो.अवधेश नारायण सिंह)
प्राचार्य

सम्पादक की कलम से

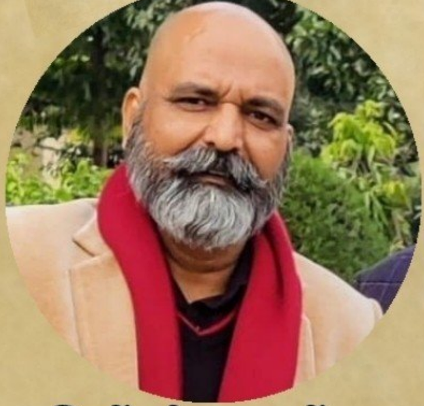

प्रिय विद्यार्थियों, सहयोगी साथियों और पाठकों,

'मेधा' के चौथे अंक के साथ आप सभी का पुनः स्वागत है। एक शैक्षणिक संस्थान की पत्रिका का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों की प्रतिभा के विकास और संवर्धन में योगदान देना है। मुझे खुशी है कि 'मेधा' को अपनी रचनाओं से समृद्ध करने वाले मेधावियों की संख्या में लगातार बढ़ोत्तरी हो रही है। उनकी रचनाओं में विविधता और परिष्कार - दोनों ही स्पष्ट रूप से परिलक्षित हो रहे हैं।

इस अंक में भी विद्यार्थियों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से अपनी मौलिक सोच और रचनात्मक प्रतिभा की खुलकर अभिव्यक्ति दी है। चाहे वह सामाजिक संरचनाओं का विश्लेषण हो या आधुनिक जीवन शैली के बदलते प्रतिमान, हमारे मेधावियों ने हर विषय पर अपनी गहरी पैठ दिखाई है। हमारी शिक्षण प्रक्रिया का असली मकसद भी यही है कि इसके माध्यम से विद्यार्थी इतना सक्षम बन सके कि वह न केवल समस्याओं को समझे, बल्कि उसके विभिन्न पहलुओं की व्याख्या करते हुए उनके समाधान के लिए नवाचार का मार्ग भी प्रशस्त करे।

मुझे भरोसा है कि तर्क, संवाद और रचनात्मकता के संगम का यह मंच विद्यार्थियों को अपनी क्षमताओं को पहचानने और उनकी अभिव्यक्ति के लिए प्रेरित करेगा। इसी के साथ एक बार पुनः आप सभी से अनुरोध है कि अपनी रचनाओं, सुझावों और प्रतिक्रियाओं के माध्यम से इस ई-मैगज़ीन को और अधिक समृद्ध बनाएं। आप अपने सुझाव और प्रतिक्रियाएँ sociosbs@gmail.com पर भेज सकते हैं।

Rajesh
10.05.2026

(डॉ.राजेश कुमार सिंह)
सम्पादक "मेधा"

They Said "Nothing Happens Here" But They All Were Wrong

Anamika Singh
B.A. 6th Semester

Before I leave these gates,
I want to say something
that my first-year self would never believe.
I almost let rumours decide my future.
They said learning never happens here.
They said opportunities never reach here.
They said no one here guides or notices you.
They said it was only for a piece of degree.
but
They all were wrong.

Coming from a private English-medium school, I too believed that what is close to home can not be special. We often overlook what is nearest to us, thinking value must exist some where farther away. But some places do not prove themselves loudly. They reveal themselves quietly. This college did exactly that.

If you were sincere, guidance was there. Support was there. Classes were there. If you wanted to learn more, teachers were ready to give more. If you were willing to grow, this place noticed you. The professors here did not just teach lessons. They built confidence, gave direction, and reminded students of their potential. They noticed effort, encouraged discipline, and supported ambition.

Some teachers finish chapters. Some teachers shape chapters of your life. The college also gave opportunities that mattered - platforms to speak, to participate, to learn, and to meet people whose journeys could inspire your own.

And then there were the people I met here. Different stories. Different struggles. Different dreams. Yet so much strength, humility, and determination in one place. They changed the way I looked at the world.

I came here
with assumptions.
I leave
with gratitude.
People said nothing happens here.
I learned that
not every blessing arrives with attention.
This college deserves to be known
not by rumours,
but by its good teachers,
positive environment,
and the quiet way
it helps students grow.
And this place
proved it beautifully.

****

वृद्ध हैं विरासत

नेपोलियन
बी.ए. षष्ठम सेमेस्टर

शजर बूढ़ा ही सही, उसे आँगन से मत काटो,
फल भले न दे पाए, मगर छाँव ज़रूर देता है..

हमारी आधुनिक सभ्यता में हम अक्सर पुरानी चीज़ों को 'आउटडेटेड' कहकर त्याग देते हैं, लेकिन इंसान और अनुभव कभी पुराने नहीं होते। वृद्ध हमारे समाज की वह नींव हैं, जिस पर भविष्य की इमारत खड़ी होती है।

एक पुरानी कहावत है कि "एक बुजुर्ग की मृत्यु एक पूरे पुस्तकालय के जल जाने के समान है।" हम आज जिस समस्या का समाधान Google पर ढूँढते हैं, उसका व्यावहारिक हल हमारे घर के बुजुर्ग अपनी यादों की पोटली में दबाए बैठे होते हैं।उदाहरण: एक स्टार्टअप शुरू करने वाला युवक केवल डेटा देख सकता है, लेकिन उसके दादा उसे 'धैर्य' और 'बाज़ार के उतार-चढ़ाव में मानसिक संतुलन' रखने का वह गुर सिखा सकते हैं जो किसी बिजनेस स्कूल में नहीं सिखाया जाता।

आजकल की 'न्यूक्लियर फैमिली' के दौर में बच्चे अक्सर अकेलेपन का शिकार होते हैं। यहाँ बुजुर्ग एक पुल का काम करते हैं। वे बच्चों को कहानियों के माध्यम से ईमानदारी, साहस और प्रेम जैसे मूल्य सिखाते हैं। वे केवल कहानियाँ नहीं सुनाते, बल्कि वे खुद उन मूल्यों का जीता-जागता उदाहरण होते हैं। बुजुर्गों के साथ समय बिताने से बच्चों की शब्दावली और सामाजिक समझ (Social Intelligence) में तेज़ी से सुधार होता है । ये उनके संज्ञात्मक विकाश में सहायक साबित होता है।

अगर हम तर्क (Rationality) की बात करें, तो समाज का संतुलन तभी बना रहता है जब जोश (युवा) और होश (बुजुर्ग) एक साथ चलें। जिन समाजों में बुजुर्गों का सम्मान कम हुआ, वहां पारिवारिक बिखराव और मानसिक अवसाद की दर बढ़ी है। इससे सामाजिक स्थिरता पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

वृद्धों को केवल भोजन और दवा देना ही सम्मान नहीं है। उनकी असली ज़रूरत 'प्रासंगिकता' (Relevance) है। उन्हें महसूस होना चाहिए कि उनकी सलाह की आज भी ज़रूरत है। जब हम उनसे पूछते हैं कि "दादाजी, इस स्थिति में आप क्या करते?" तो वह सवाल उन्हें जीवन की नई ऊर्जा देता है।

विरासत केवल म्यूजियम में नहीं रखी जाती। हमारे घर की सबसे बड़ी विरासत वह बुजुर्ग हैं जो सुबह की धूप में बैठकर अखबार पढ़ते हैं या शाम को मंदिर की ओर जाते हैं। वे हमारे कल के निर्माता थे और आज के मार्गदर्शक हैं।

****

आधुनिकता बनाम परम्परा: एक अंतर्द्वंद्व, एक समन्वय

रश्मि तिवारी
एम.ए. चतुर्थ सेमेस्टर, समाजशास्त्र

मनुष्य का जीवन एक प्रवाह है—समय के साथ निरंतर बहता हुआ, बदलता हुआ, विकसित होता हुआ। इस प्रवाह में दो प्रमुख धाराएँ सदैव साथ-साथ चलती हैं—परम्परा और आधुनिकता। परम्परा हमें अतीत से जोड़ती है, हमारी जड़ों को सींचती है, जबकि आधुनिकता हमें भविष्य की ओर अग्रसर करती है, नए विचारों और सम्भावनाओं के द्वार खोलती है।

किन्तु जब ये दोनों धाराएँ आपस में टकराती हैं, तब उत्पन्न होता है एक गहन प्रश्न—क्या हमें परम्परा को थामे रहना चाहिए या आधुनिकता को अपनाना चाहिए? यही द्वंद्व आज के समाज का सबसे महत्वपूर्ण विषय बन चुका है।

परम्परा: हमारी सांस्कृतिक विरासत-

परम्परा केवल रीति-रिवाजों का संग्रह नहीं है, यह हमारे अस्तित्व की जड़ है। यह वह अमूल्य धरोहर है जो पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होती आई है। हमारे त्योहार, हमारी भाषा, हमारी पारिवारिक व्यवस्था—ये सभी परंपरा के स्वरूप हैं। परम्परा हमें यह सिखाती है कि जीवन केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि सामूहिक भी है। परम्परा में एक आत्मीयता है, एक अपनापन है। जब हम दीपावली पर दीप जलाते हैं, होली पर रंगों में डूबते हैं, या किसी बुजुर्ग के चरण स्पर्श करते हैं—तब हम केवल एक क्रिया नहीं करते, बल्कि अपनी जड़ों से जुड़ते हैं।

आधुनिकता: परिवर्तन की आहट-

आधुनिकता परिवर्तन का प्रतीक है। यह वैज्ञानिक दृष्टिकोण, तार्किकता और स्वतंत्रता की भावना को प्रोत्साहित करती है। आज का युग तकनीक का युग है— इंटरनेट, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, वैश्वीकरण—ये सभी आधुनिकता के ही परिणाम हैं। आधुनिकता ने मनुष्य को सीमाओं से मुक्त किया है और उसे वैश्विक नागरिक बना दिया है। यह हमें प्रश्न करने की शक्ति देती है, रूढ़ियों को तोड़ने का साहस देती है, और अपने जीवन को अपनी इच्छानुसार जीने की स्वतंत्रता प्रदान करती है।

परम्परा और आधुनिकता का संघर्ष:

समस्या तब उत्पन्न होती है जब परम्परा और आधुनिकता एक दूसरे के विरोध में खड़ी हो जाती हैं। एक ओर परम्परा कहती है—"ऐसा ही चलता आया है",

दूसरी ओर आधुनिकता कहती है—"क्यों? इसे बदलना चाहिए।" उदाहरण के लिए—

* विवाह की परम्परागत व्यवस्था बनाम प्रेम विवाह
* संयुक्त परिवार बनाम एकल परिवार
* पारम्परिक शिक्षा बनाम आधुनिक डिजिटल शिक्षा

इन सभी स्थितियों में व्यक्ति एक द्वंद्व में फँस जाता है—कि वह अपने संस्कारों का पालन करे या अपने नवीन विचारों का अनुसरण?

भावनात्मक पक्ष: जड़ों से बिछड़ने का दर्द-

जब कोई व्यक्ति आधुनिकता की ओर बढ़ता है, तो अक्सर वह अपनी परम्पराओं से दूर होता चला जाता है। गांव से शहर की ओर पलायन केवल स्थान का परिवर्तन नहीं है, यह एक भावनात्मक यात्रा भी है। जहाँ एक ओर शहर की चमक-दमक है, वहीं दूसरी ओर गाँव की सादगी और अपनापन छूट जाता है। बुजुर्गों की आँखों में वह प्रतीक्षा, त्योहारों की फीकी होती रौनक, रिश्तों में आती दूरी—ये सभी इस बात के संकेत हैं कि कहीं न कहीं आधुनिकता ने परम्परा को पीछे छोड़ दिया है।

आधुनिकता के लाभ-

आधुनिकता ने समाज को अनेक सकारात्मक परिवर्तन दिए हैं, जैसे- महिलाओं को समान अधिकार और स्वतंत्रता, शिक्षा का प्रसार, वैज्ञानिक सोच का विकास, अंधविश्वासों में कमी। आज की नारी आत्मनिर्भर है, अपने निर्णय स्वयं लेने में सक्षम है। यह आधुनिकता की ही देन है।

परम्परा का महत्व-

परम्परा हमें नैतिक मूल्यों से जोड़ती है। यह हमें सिखाती है—बड़ों का सम्मान, परिवार का महत्व, सामूहिक जीवन की भावना। यदि परम्परा न हो, तो समाज केवल व्यक्तियों का समूह बनकर रह जाएगा, जिसमें भावनाओं का अभाव होगा।

समन्वय की आवश्यकता-

वास्तव में समस्या परम्परा या आधुनिकता में नहीं है, बल्कि उनके बीच संतुलन की कमी में है। हमें यह समझना होगा कि—हर परम्परा अच्छी नहीं होती और हर आधुनिक विचार सही नहीं होता। हमें विवेक के साथ चयन करना चाहिए—जो परम्पराएँ मानवता, प्रेम और नैतिकता को बढ़ावा देती हैं, उन्हें अपनाना चाहिए तथा जो परम्पराएँ रूढ़िवादी और भेदभावपूर्ण हैं, उन्हें छोड़ देना चाहिए। आधुनिकता के उन पहलुओं को अपनाना चाहिए जो जीवन को सरल और सार्थक बनाते हैं।

भारतीय समाज इसकी एक उत्कृष्ट मिसाल है, जहाँ परम्परा और

आधुनिकता दोनों साथ-साथ चलते हैं। यहाँ एक ओर मंदिरों की घंटियाँ बजती हैं, तो दूसरी ओर विज्ञान की प्रयोगशालाएँ भी सक्रिय हैं। यह समन्वय ही हमारी पहचान है—जहाँ हम आधुनिक भी हैं और सांस्कृतिक भी।

निष्कर्ष-

आधुनिकता और परम्परा दो विरोधी नहीं, बल्कि पूरक शक्तियाँ हैं। परम्परा हमें जड़ देती है, आधुनिकता हमें पँख देती है। यदि हम केवल जड़ों से जुड़े रहेंगे, तो आगे नहीं बढ़ पाएँगे; और यदि केवल पँखों के सहारे उड़ेंगे, तो अपनी पहचान खो देंगे। इसलिए आवश्यक है कि हम दोनों के बीच संतुलन स्थापित करें—जड़ों से जुड़े रहें और आकाश की ओर भी उड़ान भरें।

अंततः, जीवन का सौंदर्य इसी संतुलन में निहित है, जहाँ अतीत की स्मृतियाँ हों, वर्तमान की समझ हो, और भविष्य के सपने हों। आधुनिकता और परम्परा का यह संगम ही हमें एक पूर्ण, समृद्ध और संतुलित जीवन की ओर ले जाता है।

****

राष्ट्रीय सेवा योजना का 'A' प्रमाणपत्र प्राप्त करते स्वयंसेवी

****

Life Between Milestones

Manya Khurana
M.A. 4th Semester, Political Science

While chasing milestones, it's easy to forget that life isn't waiting at the finish line—it's unfolding in everything that happens in between. Somewhere along the way, the focus quietly shifts to the next step: school, then college, then a job. The transition feels so natural that it barely gets noticed.

Most of life ends up being lived in that in-between space, yet it's often treated as temporary, as if it doesn't count. The routine takes over before there's even time to question it. Looking back, it starts to feel like everything was part of a pattern already set in motion.

It was only later that the realization began to settle in- that much of what felt like "living" was actually shaped by influence more than intention. Not necessarily wrong, just... automatic. Like moving through a loop that was never consciously chosen.

And somewhere in between all of this, a different kind of fear begins to grow-the constant anticipation of what might go wrong next. What new problem might show up, what unexpected pressure might hit. It starts to feel like life is something happening to us, something unpredictable that we just have to deal with.

But maybe that's not entirely true. Maybe life isn't just coming at us from the outside. Maybe it's also moving through us-shaped by the way we think, respond, and choose. The situation may not always be in control, but the direction slowly forms from within. And that realization, in a quiet way, takes some of the weight off.

For students especially, this shift matters. It's easy to get defined by deadlines, expectations, and the next milestone waiting

ahead. But those aren't the main story. They're just parts of it. The pressure, the overthinking, the constant need to keep up- it all gets louder when life is seen as a fixed path instead of something still being shaped.

Milestones are important, no doubt. They give structure, something to move towards. But they're not the whole of life. When everything starts feeling like a pattern, like a loop that just keeps repeating, it becomes even more important to pause and recognize that not everything has to be lived on autopilot.Because life is not only about reaching somewhere. It's also about being somewhere.

There's no guarantee of perfect timing, no certainty about what comes next. And maybe that's exactly why it matters to not postpone living until everything feels sorted.

Goals should guide, not control. They should come from within, not just from influence. Otherwise, even after reaching them, there's a strange need to remind ourselves how to live again.

In the end, life doesn't pause between milestones. It exists right there-in the ordinary, in the uncertain, in the in-between.

And maybe the most important thing to remember is this:

"Life is not coming at you - It's coming from you."

****

महाविद्यालय के रक्तदान शिविर में पिछले दो वर्षों से लगातार रक्तदान करने वाले शिक्षक योद्धाओं को सलाम..

भोजन की कीमत

कैलाश चौधरी
एम.कॉम. द्वितीय सेमेस्टर

क्या आपने कभी सोचा है कि हमें जो भोजन थाली में सजा-सजाया मिलता है, उसकी कीमत क्या हो सकती है? हम में से अधिकतर लोगों का जवाब होगा नहीं और अगर सोचा भी होगा तो क्या कीमत लगायी होगी आपने उस एक थाली भोजन की, जो आपका पेट भर सके? यदि आपने भोजन अपने घर पर तैयार किया है, तो आपने पाया होगा कि 30 से 60 रुपये प्रति थाली खर्च आया होगा। यदि आपने यही खाना बाहर से मँगवाया होगा तो आपने पाया होगा कि यही कीमत 250 से 300 तक पहुँच गई होगी। परंतु मेरा प्रश्न यह है कि क्या यह इस भोजन की सही कीमत है? और इसकी कीमत को पैसे से तोलना उचित होगा? नहीं...ऐसा करना उचित नहीं होगा। क्या हमने कभी ये विचार किया कि जो भोजन हमें बना बनाया मिलता है, वह किस प्रकार से हम तक पहुँचता है? क्या हमने कभी विचार किया कि जिन फसलों से भोजन तैयार हुआ, वह कैसे तैयार हुई होंगी? शायद नहीं...तो आइये थोड़ा जानने का प्रयास करते हैं। तब शायद हम सही मूल्य का अनुमान लगा पाएं।

किसी भी फसल को उगाने के लिए किसानो को कड़ी मेहनत करनी पड़ती है। आप इसका अनुमान तभी लगा सकते हैं, जब आपने उनको काम करते देखा होगा। किसी भी फसल को तैयार होने मे 5 से 6 महीने का समय लगता है। इसी अवधि में प्रकृति अनुकुल वातावरण तैयार करती है, जो इस फसल को फलने-फूलने के लिए आवश्यक होती है। फिर जब फसल तैयार हो जाती है, तो उसकी कटाई की जाती है। फिर उसको बाजार में बेचा जाता है, फिर वह बाजार से मिल में पहुँचता है। फिर उसकी सफाई, पिसाई होती है। फिर वहाँ आटे-चावल के रूप में तैयार होता है। उसके बाद फिर वहाँ से बाजार पहुँचता है, उसके बाद हम उसे खरीद कर लाते हैं। उसके बाद उसको पकाया जाता है, फिर वह भोजन के रूप में हमारी थाली में पहुँचता है।

तो अब विचार कीजिये कि क्या कीमत लगाएंगे आप उस किसान की मेहनत का..?? क्या कीमत होगी उस अनुकूल वातावरण की जो प्रकृति ने हमें दिया..?? शायद हम में से कोई इसकी सही कीमत नहीं लगा सकता। इसलिए हमारी थाली में जो भोजन होता है, वो अनमोल होता है। और हम भाग्यशाली हैं कि हमें यह मिल रहा है। वरना, बहुत से लोग ऐसे हैं, जिनको दिन में एक समय का भोजन तक नहीं मिलता है। तो आइए उस भोजन का सम्मान करें और भोजन को कभी भी बरबाद न करें।

****

मित्रता

प्रेम विश्वास
बी.कॉम. द्वितीय सेमेस्टर

मित्रता का रिश्ता भगवान स्वयं क्यों बनाकर नहीं देते कभी सोचा है। पिता का, माता का, बहन का, भाई का, यहाँ तक कि शिक्षक का रिश्ता भी वह स्वंय बनाकर देते हैं। परंतु मित्रता का नहीं, क्योंकि मित्रता ही एकमात्र ऐसा रिश्ता होता है- जो हमें पिता के समान त्याग और सहारा दे सकता है, माँ की तरह प्यार कर सकता है, भाई की तरह साथ खड़ा हो सकता है, बहन की तरह सीख और शरारत कर सकता है, गुरु की तरह कर्तव्य पथ पर चलना सिखा सकता है। मित्र एक ही होता है, परन्तु उसमें सभी रिश्तों के गुण समाहित होते हैं। इसलिए मित्र का चयन स्वयं करने का अधिकार भगवान ने दिया है।

मित्र वो जो सुख में, दुख में, मस्ती में, परेशानी में, पढ़ाई में, हर वक्त आपके साथ है। मित्र वो जो भीड़ में आपका साथ ना छोड़े, मित्र वो जो आपको खुशी का पात्र बनाए, ना कि मजाक। मित्र वो जो सत्य के मार्ग पर चलना सिखाए। मित्र वो जो आपको देखकर बता दे कि आप परेशानी में हो। मित्र वो जो आपके आते ही सारे दुख भूल जाये।

आप सभी को पता ही होगा यदि मित्रता की बात चल रही है तो सर्वश्रेष्ट उदाहरण एक ही हो सकता है- कृष्ण और सुदामा का। जिस प्रकार कृष्ण राजा थे, जिनके पास सभी प्रकार की सुख-सुविधा, धन-वैभव, सम्पत्ति सब मौजूद थी। वहीं सुदामा एक गरीब ब्राह्मण थे, फिर भी दोनों परममित्र थे। यही आज के लोग नहीं समझ पाते। मित्रता अमीर-गरीब, जात-पाँत, ऊँच-नीच, देखकर नहीं की जाती है। मित्र दिल से बनता है। मित्रता में लोभ, ईर्ष्या, घमंड, यह सब नहीं होना चाहिए। मित्र अनेक नहीं, सीमित संख्या में होने चाहिए, जिनमें यह सभी गुण विद्यमान हों। वर्तमान में मित्रता काम के लिए बनती है, काम खत्म तो मित्रता भी खत्म। परन्तु लोग यह नहीं सोचते कि जो दिल से मित्रता निभा रहा था, उस पर क्या बीती होगी। जिस प्रकार लोग प्रेम में धोखा खाते थे, आज कल तो मित्रता में धोखा खाते हैं।

मित्र ने मित्र से पूछा, मित्र बने हो कैसे मेरे..?
मित्र ने मित्र से कहा, जो मैंने तुम में पाया और किसी में नहीं..
मित्र ने मित्र से पूछा, पाया क्या मुझमें तुमने..?
मित्र ने मित्र से कहा- माता समान प्यार, पिता समान सहारा,
बहन जैसी सीख, भाई जैसा साथ, गुरु समान अनुशासन..
मित्र ने मित्र से पूछा, रहोगे मेरे सदा क्या मित्र..?
मित्र ने मित्र से कहा- प्राण जाय, पर मित्रता न जाय..
प्राण जाय, पर मित्रता ना जाय..

****

Education Without Execution
A System of Misaligned Incentive

Tarandeep Kaur
B.Com. 6th Semester

The modern education system continues to expand in scale, yet struggles in one critical function: converting learning into real-world capability. The issue is not access to education, but weak conversion of knowledge into execution.

The Core Problem: Conversion, Not Access:

Education functions as a human capital system. Where Inputs are time, money, effort and Outputs are degrees, certifications. The missing layer is conversion: which is from learning to execution capability and from education to real-world productivity. This defines the central inefficiency. Education produces information at scale, but not consistently usable capability. The constraint is not learning volume, but transformation quality. At its core, the system measures completion, not capability.

Incentives: What the System Optimizes For:

Education systems are designed around what is easiest to measure; exams, grades, pass rates, certifications. Naturally, learners align effort accordingly. This creates a structural reality: What is measured becomes what is prioritized. So the system becomes efficient at producing credentials, but inconsistent at producing execution ability. In simple terms, it rewards what is visible, not what is valuable.

Theory vs Execution in Real Environments:

Academic systems prioritize conceptual clarity. The market evaluates applied performance under constraints. Education asks: What is this concept? While the market asks: Can you apply it under real conditions?.

In real environments: data is incomplete, decisions are time-bound, outcomes are uncertain. But academic evaluation rarely reflects this uncertainty. As a result, learners build frameworks without developing execution under pressure. Knowledge exists, but usability is untested.

Practical Exposure Gap:

Most "practical learning" remains simulated. Typical formats: charts, models, predefined projects. These evaluate presentation of knowledge, not real application. Actual capability requires real feedback loops, real constraints, and real consequences of decisions. Without this, learning remains informational rather than operational. This is where many students unknowingly stop at structured understanding, not real execution.

Structural Inequality in Exposure:

Skill development is uneven across learners. Some gain internships, mentorship, networks, and early industry exposure. Others depend entirely on syllabus-based learning. This creates an exposure gap that later becomes a capability gap.

The difference is not intelligence. It is access to information, guidance, and real world signals. In many cases, students do not lack ability, they lack direction at the right time.

Economic Lens: Productivity and Output:

Economic strength depends less on scale and more on how efficiently human capital converts into output. Where conversion is strong: productivity per worker increases, capability translates into measurable economic output. Where conversion is weak: credentials increase, productivity remains relatively stagnant.

This reflects transformation efficiency, not education quantity. Large populations only become an advantage

when converted into productive capability. Otherwise, scale exists without output.

Skill vs Degree Paradox:

In high-population systems, degrees increasingly function as screening filters or shortlisting mechanisms rather than reliable indicators of capability. This creates a paradox: Individuals may appear qualified on paper but remain unprepared for real execution. Companies use degrees not to identify excellence, but to reduce volume. So students optimize for entry, while markets evaluate performance after entry.

System Reality: Misalignment, Not Failure:

The system is not broken. It is optimized for scale, standardization, and measurable outcomes, but not for adaptability, execution capability, or real world readiness. This produces a stable but misaligned equilibrium. It is efficient in producing outcomes it was designed for, but those outcomes are not aligned with market expectations.

What Needs to Change (System + Personal Pivot):

Education must shift from completion based learning to execution based learning:

- case-based evaluation instead of recall-based exams
- real-world projects instead of theoretical submissions
- early internships and applied exposure cycles
- learning embedded within real constraints
- stronger focus on decision-making and problem-solving

But system change is slow. So individual response can not wait. Students must start building their own execution cycles: applying concepts in real projects, building practical outputs, and seeking real exposure early. Because while systems evolve slowly,

capability is built individually through execution, not intention.

Final Reflection - Education Without Execution

Getting degrees, not getting skills,
just passing exams and paying fees.
No real exposure, no real space,
just charts and models passed off as real-world cases.

The market moves, it does not wait,
it rewards execution, not static state.

Marks may open a temporary door,
but skills decide what you build and explore.

We study concepts but rarely apply,
we write answers but don't ask why.

Between knowledge and action lies a gap so wide,
where potential quietly stays on the side.

This is not failure, but design in place,
built for completion, not real-world pace.

And maybe the question that remains behind—
how long do we stay inside this design?

'Rabbi' writes and wonders why-
Will this change or pass us by?

****

सोशल मीडियाः दोस्त या दुश्मन

प्रीति मेहरा
बी.ए. चतुर्थ सेमेस्टर

सोशल मीडिया आज के समय पर एक शक्तिशाली माध्यम बन चुका है, जिसने मानव जीवन को एक प्रकार से आसान बना दिया है। यह दोस्त की तरह हमें देश-विदेश की खबरें तुरंत देता है और अपने ही देश के नहीं, बल्कि विदेश के लोगों के साथ भी हमें जोड़ता है। हमे हर तरीके से अपनी बात को रखने का एक सुनहरा मौका भी देता है। किसी भी प्रकार की परेशानी हो, सोशल मीडिया तुरंत उसका जवाब दे देता है- चाहे बिजनेस हो, पढ़ाई हो या मनोरंजन, सोशल मीडिया हर प्रकार से सहायक है। आज युवा सोशल मीडिया से बहुत ज्यादा जुड़ा हुआ है। आज बच्चे से लेकर बुजुर्ग तक सभी सोशल मीडिया से जुड़ गए हैं। आज की युवा पीढ़ी बिना सोशल मीडिया के जीवन यापन कर ही नहीं सकती,क्योंकि उन्होंने अपने आप को पूरी तरह से इसी के अनुसार ढाल लिया है। सोशल मीडिया से आज एक जिंदगी का अहम हिस्सा बन चुका है। बच्चों को किसी भी प्रकार का प्रश्न पूछना हो, तो वह सोशल मीडिया से जान लेते हैं। वह सोशल मीडिया की दुनिया में काफी आगे बढ़ चुके हैं। उन्हें घर बैठे देश विदेश की जानकारी मिल जाती है, चाहे वह शिक्षा से संबंधित हो या युद्ध या फिर अन्य किसी भी प्रकार की जानकारी हो।

सोशल मीडिया एक ऐसा प्लेटफॉर्म है जहाँ व्यक्ति को आगे बढ़ने के बहुत सारे अवसर मिलते हैं। यह ऑनलाइन माध्यम से पैसे कमाने का एक अद्भुत जरिया है। इसके माध्यम से विद्यार्थी कम से कम पैसों में ऑनलाइन कोचिंग ले सकते हैं और साथ ही अपना जेब खर्च भी खुद निकाल सकते हैं। इसी वजह से सोशल मीडिया को सब अपना दोस्त, मित्र और सहपाठी कहते हैं।

सोशल मीडिया का अगर गलत उपयोग हो तो यह दुश्मन भी बन सकता है। ज्यादा सोशल मीडिया इस्तेमाल करने से समय की बर्बादी होती है, मानसिक तनाव भी काफी बढ़ता है। सोशल मीडिया ने व्यक्ति की सोचने समझने की क्षमता को भी खत्म कर दिया है। आज लोग किसी भी प्रश्न का उत्तर तलाशने के लिए किताब नहीं, बल्कि मोबाइल उठाते हैं। सोशल मीडिया पर साइबर क्राइम जैसे अपराध होते हैं। धोखाधड़ी और लोगों की प्रोफाइल से उनकी फोटो का गलत इस्तेमाल कर उन्हें ब्लैकमेल करके पैसे वसूलने जैसे काम भी हो रहे हैं। लोगों की फेक आईडी बनाकर उसका गलत इस्तेमाल किया जाता है। सोशल मीडिया का उपयोग बड़े-बड़े क्रिमिनल भी करते हैं, जो कि कभी-कभी एक सामाजिक आर्थिक परेशानी का मुद्दा बन जाता है।

इसका दूसरा पक्ष ये है कि आजकल बच्चों को केवल फोन से ही मतलब है। उन्हें अपने घर, माँ-बाप से कोई लेना-देना नहीं। आज का बच्चा सोकर उठता है तो माँ के पास नहीं, बल्कि फोन के पास जाता है। वह बिना खाए-पिए, बिना किसी से बोले भी रह लेता है, पर बिना फोन के उसकी साँसें भी नहीं चलती। खाना खाने के लिए उसे फोन चाहिए,

सोने के लिए भी उसे फोन चाहिए। मां-बाप रील बनाने में व्यस्त रहते हैं और बच्चों को फोन थमा देते हैं। माँ-बाप अपने बच्चों के साथ समय नहीं बिताते, इसीलिए बच्चा मजबूरी में अकेले रहने लगता है। बाद में उसे ही अकेलापन खाने लगता है तो वह गलत रास्ते पर चलता है, जैसे नशा करना आदि। बच्चों की आँखें, मानसिक शारीरिक स्थिति खराब हो रही है और उनके स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ रहा है।

दरअसल सोशल मीडिया न तो पूरी तरह से दोस्त है और न ही दुश्मन। यह इस बात पर निर्भर करता है कि हम इसका उपयोग कैसे कर रहे हैं। सही व सीमित उपयोग इसे हमारा दोस्त बनाता है और वहीं गलत व असीमित उपयोग दुश्मन। इसलिए हमें सोशल मीडिया के गलत और असीमित उपयोग से बचते हुए इसका सही इस्तेमाल करना चाहिए। इसे ज्यादा से ज्यादा अपने बच्चों से दूर रखना चाहिए। सोशल मीडिया के माध्यम किसी भी तरह के फ्रॉड कॉल या मैसेज आने पर हमें तुरन्त पुलिस में शिकायत दर्ज करानी चाहिए। सरकार ने इन सब समस्याओं से निपटने के लिए ही सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम 2000 लागू किया है, जिसका प्रमुख उद्देश्य भारत में साइबर अपराध की रिपोर्टिंग के साथ-साथ इंटरनेट के प्रभावी उपयोग के लिए अनुकूल वातावरण बनाना है।

****

Alumnae Corner

नारी शक्ति : विकसित भारत की आवाज

नारी शक्ति - विकसित भारत की आवाज के तहत युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय भारत सरकार द्वारा श्री राम कॉलेज ऑफ़ कॉमर्स नई दिल्ली में आयोजित महिला युवा संसद कार्यक्रम में गदरपुर की मुस्कान चावला ने कॉर्पोरेट मंत्री के रूप में केंद्रीय युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्री डॉ. मनसुख मंडावीया के समक्ष नारी शक्ति वंदन अधिनियम का समर्थन करते हुए अपने विचार रखे । माय भारत बजट क्वेस्ट 2026 के तहत महिला युवा संसद में दिल्ली और उत्तराखंड से कुल चयनित 40 युवा महिलाओं ने मंत्री और सांसदों के रूप में प्रतिभाग किया। मुस्कान चावला महाविद्यालय के वाणिज्य संकाय की पूर्व छात्रा और नेहरू युवा केंद्र, ऊधम सिंह नगर, विकासखंड- गदरपुर की माई भारत से जुड़ी सक्रिय स्वयंसेवी हैं। मुस्कान चावला ने भारत के संसद भवन में उत्तराखंड का प्रतिनिधित्व करते हुए भाषण भी दिया है।

****

महाविद्यालय का अक्षयवट

कुमकुम मिश्रा
एम.ए. द्वितीय सेमेस्टर, राजनीति विज्ञान

क्या आप सभी जानते हैं कि पेड़ - पौधे हमारा कितना खयाल रखते हैं? ये हमारे जीवन की बागडोर को संभाले हुए हैं। जिस प्रकार एक माँ अपने बच्चे को गर्भ में सींचती हैं, ठीक उसी प्रकार एक पेड़ बनने के लिए उसकी पत्तियों को प्रतिदिन सींचना पड़ता हैं ओर यह काम सिर्फ एक माली का ही नहीं है, बल्कि उन सभी लोगों का है, जो इस धरती पर रहते हैं।

क्या आप जानते हैं कि ये पेड़-पौधे, वनस्पतियाँ, पहाड़, नदियाँ, इत्यादि प्राचीन काल से भी पुराने हैं। मानव सभ्यता के विकास में इन सभी चीजों का बहुत बड़ा योगदान रहा है। हमें अपने पर्यावरण को बचाना बहुत जरूरी है, क्योंकि यह हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग हैं। पेड़-पौधे हमें प्राकृतिक शुद्धता का अहसास कराते हैं, ये हमें जीवित रहने के लिए ऑक्सीजन देते हैं। मई-जून की तपती गर्मियों से ये वृक्ष ही तो हैं, जो हमें छाया प्रदान करते हैं।

मैं हर रोज़ महाविद्यालय के बरगद के उस पेड़ को देखती हूँ, जहाँ हजारों बच्चे बैठकर बातें करते हैं, समय व्यतीत करते हैं। गर्मी से बचने के लिए उस एक विशाल वृक्ष की शरण में बैठते हैं। वह एकमात्र वृक्ष ही पूरे महाविद्यालय को फैक्ट्री के धुएँ से बचाए हुए हैं। फैक्ट्रियों से निकलने वाले हानिकारक धुएँ को पेड़ पौधे स्वयं में समाहित कर लेते हैं। और जब वर्षा होती है, तो ये पेड़ पौधे पुनः हरे-भरे हो जाते हैं, ओर ठंढी हवाओं से पूरे पर्यावरण को प्रभावित करते हैं। कितना मनमोहक दृश्य हैं ये..!!

अगर हम कोरोना काल के कठिन समय की बात करें तो आप सबने देखा होगा कि लॉकडाउन के दौरान सभी लोगों के व्यवसाय बंद हो चुके थे; यहाँ तक कि फैक्ट्रियों से आने वाला हानिकारक धुआँ, जहरीली गैसें भी बंद हो चुकी थीं। गाड़ियों से उत्पन्न होने वाला प्रदूषण कम हो चुका था। यह समय काल भले ही पीड़ादायक था, लेकिन क्या आप जानते हैं कि इस कोरोना काल ने हमारे लिए एक उदाहरण भी पेश किया था कि हम अपने पर्यावरण को साफ रखने के लिए कई कदम उठा सकते हैं। उन दिनों हमारा पर्यावरण हरा-भरा, साफ-सुथरा और शुद्ध हो चुका था। सब जगह हरियाली थी, प्रदूषण का नामोनिशान नहीं था। तब हमें समझ आया कि वास्तविक प्राकृतिक सौंदर्य क्या हैं और उसका महत्त्व क्या है और वो क्यों हमारे जीवन के लिए इतना जरूरी है।

जिस प्रकार मनुष्य के जीवन में उतार चढ़ाव आते हैं, ठीक वैसे ही इन पेड़-पौधों के जीवन में भी उतार चढ़ाव आते हैं। मानव एक पल के लिए इन परिस्थितियों से हार जाता है, लेकिन क्या अपने कभी सोचा है कि ये पेड़-पौधे बोलकर अपना दु:ख बयान नहीं कर सकते। हमें उनको महसूस करने की कोशिश करनी चाहिए। पौधे से एक पेड़ बनने तक का सफर बड़ा कठिन होता है। कितनी बार उसकी कलियाँ टूटती गिरती हैं। फिर एक नई कली उगती है, गर्मी, सर्दी,वर्षा आदि सभी का सामना करने के बाद एक पौधा वृक्ष बनता है। मानव सोचता है कि सिर्फ उसके ही जीवन में संघर्ष हैं; लेकिन ऐसा नहीं है। इस धरती पर रहने वाला हर जीव-जंतु, अपने जीवन के लिए संघर्ष करता है।

इसलिए याद रखिए कि जीवन में विषम परिस्थितियाँ सबके साथ हैं, लेकिन जो इन्हें मुस्कुराकर पार कर जाए, वही असली विजेता है।

****

उच्च शिक्षा निदेशक प्रो. विश्वनाथ खाली का स्वागत करते हुए महाविद्यालय के प्राचार्य महोदय

प्राचार्य महोदय ने निदेशक महोदय को मेधा की कला सम्पादक सुइता मंडल द्वारा बनाया इंद्रमणि बडोनी जी का चित्र भेंट किया 💐

When War Speaks, Peace Falls Silent

Tannu Goyal,
B.A. 4th Semester

War disturbs the peace of people,
It carries the sound of fire.
Not the warmth that gives life,
But the flames that take it away.

The sky grows heavy with fear,
And the earth listens in pain.

Somewhere,
A mother gives birth
To a newborn child -
Holding hope in her trembling hands.

She dreams of a gentle world,
Teaches the child to love,
To help the nation,
To become something good.

But the same world whispers back -
"Fight."

The sound of guns
Drowns the voice of humanity,
And silence becomes
The loudest cry.

Children learn fear
Before they learn words,
And homes turn into memories
Before they become lives.

Some nations rise for power,
Some for land,
Some for pride.

But I still ask -
How can a fight
Ever give peace..?

War writes stories
No one wants to read,
Yet the world keeps repeating
The same painful lines.

If victory comes
With broken hearts
And empty homes -

Then tell me,
Is it really victory at all?
Or just another loss
Disguised as pride..?

****

समय बदल गया है

संगीता
बी.ए. चतुर्थ सेमेस्टर

समय बदल गया है
अब होते नहीं सवेरे पहले की तरह गाँव में
अब चुभते नहीं, बेरी के काँटे नन्हें-नन्हें पाँव में
पलायन के कारण अब तो कुछ ही लोग
रह गए हैं हमारे गाँव में।

समय बदल गया है
अब बनाया नहीं जाता खाना घर में,
ऑर्डर करते हैं, या फ़िर होटल में खाते हैं शहर में
नदी, कुआँ और तालाब अब नजर नहीं आते हैं
क्योंकि पीते हैं बिसलेरी का पानी
और नुस्खे पूछते हैं यूट्यूब से
क्योंकि वृद्धा आश्रम में रहती हैं दादी और नानी ।

समय बदल गया है
अब शामों में भी पहले जैसी वो बात नहीं है
दादा के किस्से और बच्चों की मस्ती की
अब आती आवाज नहीं है।

समय बदल गया है
मैं कहती हूँ परिवर्तन जरूरी है
परन्तु अपने बचपन को मोबाइल में बिताने की
भला क्या मजबूरी है..??
अब तो रिश्ते में भी बेनाम सी दूरी है।

और आखिर में मेरा एक सवाल है तुमसे
क्या ऐसा परिवर्तन सच में जरूरी है.. ??

****

एक स्त्री होकर भी कहाँ...

देवकी
बी.ए. द्वितीय सेमेस्टर

थी मैं एक पाकीजा स्त्री
जिसे गंदे हाथों से किया गया ग़लीज़
क्या कुसूर था मेरा
सिर्फ स्त्री होना..??
या कुसूर था मेरा इस जहान में आना..???
कहने को तो हर महफिल में
औरत को तरजीह देने के दावे किए जाते हैं
गगर जब बात हमारी इज्ज़त और हक की आती है,
तो क्यों हमें ही
सबसे पीछे ढकेल दिया जाता है?
इंसाफ की चौखट पर बैठी सरकारें भी कुछ न कर पाई
कितने ही केस आज भी फाइलों में दबे पड़े हैं
फिर किस हक से 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ का'
जगह-जगह विज्ञापन और प्रचार किया जाता है?
कभी कोई हमें
कोख के अंधेरे में ही मार देता है,
तो कभी कोई मारकर
हमारी लाश तालाब में फेंक देता है?
कहने और दिखाने को तो
भेदभाव की रवायत खत्म हो गई,
मगर आज भी हर घर, हर बस्ती
और हर शख्स के नजरिए में
वही फर्क जिंदा है...
आखिर क्यों भूल जाते हैं लोग
कि उनकी अपनी पहचान भी एक स्त्री से ही है?
वो क्यों भूल जाते हैं कि इस पूरी दुनिया को
आगे बढ़ाने वाली भी एक स्त्री ही है ?
क्या वाकई हमारा स्त्री होना कोई पाप है..?
या हमारा इस दुनिया मे आना कोई गलती है..?

****

उड़ने दो ख्वाबों को आजाद खुली हवा में

पूजा रस्तोगी
एम.ए. चतुर्थ सेमेस्टर, समाजशास्त्र

जीवन में प्राप्त की गई शिक्षा कभी बेकार नहीं जाती। पढ़ाई चाहे किसी भी रूप में हो, यह इंसान के जीवन को बेहतर बनाने में सायक होती है। कोई भी ज्ञान, छोटा या बड़ा नहीं होता। बस उसे सीखने का तरीका अलग हो सकता है। शिक्षा ही व्यक्ति के भीतर की विचारशीलता, समझदारी, सोच-विचार और जीवन की चुनौतियों का सामना करने की क्षमता को पैदा करती है। पढ़ाई का असर सिर्फ परीक्षा में अच्छे अंक पाने तक ही सीमित नहीं होता, बल्कि यह जीवन को सही दिशा दिखाने वाला मार्गदर्शक है।

दुनिया में सब कुछ बाँटा जा सकता है- संपत्ति, जमीन, यहां तक की खुशियाँ भी, लेकिन एक चीज ऐसी है जिसे न कोई चुरा सकता है और न ही छीन सकता है और वह है 'शिक्षा"। हमारे समाज में एक पुरानी कहावत है कि 'पढ़ा हुआ कभी व्यर्थ नहीं जाता', और यह बात आज के प्रतिस्पर्धी युग में और भी सटीक बैठती है।

जब हमारे पास ज्ञान होता है, तब हम भीड़ का हिस्सा बनने के बजाय अपनी खुद की राह चुनने का साहस जुटा पाते हैं। पढ़ाई हमें वह पँख देती है, जिससे हम अपने सपनो की उड़ान भर सकते हैं। एक शिक्षित व्यक्ति कभी भी परिस्थितियों का गुलाम नहीं होता। वह अपनी योग्यता के दम पर नए अवसर पैदा करना जानता है।

यह समझना आवश्यक है कि सीखने की कोई उम्र या सीमा नहीं होती। ज्ञान का कोई अन्त नहीं है। आप जो भी पढ़ रहे हैं, वह शायद आज आपको छोटा लगे, लेकिन भविष्य में वही आपकी सबसे बड़ी ताकत बनेगा। इसलिए, हमेगा जिज्ञासु बने रहें। याद रखें- पुस्तके केवल पन्ने नहीं है, वह उन रास्तों का नक्शा है जो आपको सफलता की ऊँचाइयों तक ले जाएगा। दरअसल "ज्ञान वह निवेश है, जिसका मुनाफा जीवन के अन्त तक मिलता रहता है।" अन्त में मैं कहना चाहूँगी -

पढ़ कर खुद चुनो अपनी राहें...
भीड़ का हिस्सा बनना क्यों है,
वो करो जो दिल कहता है
हर बात दूसरों की सुनना क्यों है,
राहें भी तुम्हारी हैं, सपने भी तुम्हारे हैं..
फिर किसी और का रास्ता पकड़ना क्यों है..??
उड़ने दो ख्वाबों को आजाद खुली हवा में ,
पिंजरे में खुद को रखना क्यों है..!!!

****

Book Review

Deschooling Society : Ivan Illich

Napoleon , B.A. 6th Semester

Have you ever wondered if the years we spend in classrooms are actually making us smarter, or just conditioning us to fit neatly into a system? In Deschooling Society, radical thinker Ivan Illich poses exactly this question. Published in 1971, this provocative manifesto challenges the very foundation of modern education, arguing that institutionalized schooling is not the great equalizer we are led to believe it is, but rather a mechanism that stifles genuine learning and deepens social inequalities. For those of us navigating the structures of higher education, balancing exam preparations with the desire for actual intellectual growth, Illich's premise hits uncomfortably close to home.

He draws a sharp, unapologetic distinction between learning - a natural, lifelong, and self-directed human activity and schooling - a rigid, institutional process focused on measurable outputs and standardized testing. Illich posits that by making education mandatory and institutional, society has effectively monopolized learning. We have been conditioned to believe that genuine knowledge can only be dispensed by certified professionals within the four walls of a classroom, delegitimizing the vast, rich knowledge gained through lived experience and community interaction.

At the core of Illich's critique is the concept of the "hidden curriculum." He argues that schools do not primarily teach reading, writing, or critical thinking; rather, they teach students to conform to the institutional framework itself. The hidden curriculum instills the belief that everything can be measured and graded, and that an individual's worth is directly correlated to the number of credentials

they possess. This dynamic creates a society of dependent consumers, people who wait to be taught rather than taking the initiative to discover. It trains students to consume education as a product rather than engage with it as a transformative process.

Expanding beyond just the classroom, Illich views the school system as a blueprint for the broader "institutionalization of values." When we equate schooling with learning, we begin to equate hospitals with health, police with safety, and institutions with the very fabric of social order. This shift strips communities of their self-reliance. When individuals rely entirely on bureaucratic systems to solve their problems, they lose the capacity to help themselves and each other, leading to a profound sense of alienation and a deepening of systemic social hierarchies.

What makes Deschooling Society particularly fascinating today is Illich's visionary solution. Long before the internet revolutionized information access, Illich advocated for the complete dismantling of schools in favor of decentralized "learning webs."

He proposed four specific networks to replace formal schooling:

Reference Services to Educational Objects:

Open access to resources, libraries, and laboratories for independent study.

Skill Exchanges:

Platforms where individuals could list their practical skills and teach them to others without needing formal certification.

Peer-Matching:

Networks designed to connect people with similar intellectual interests for collaborative inquiry and discussion.

Reference Services to Educators-at-Large:

Directories of independent professionals and experienced individuals willing to guide learners.

Reading this in our current digital age, his foresight is uncanny. Open-source platforms, online skill sharing, and digital forums are the modern manifestations of the very networks Illich imagined over fifty years ago.

However, evaluating the book requires a critical lens, especially regarding the practical application of his theories. A common critique is that Illich's call to completely dismantle the school system borders on utopian and overlooks complex social realities. Schools, despite their heavy systemic flaws, serve essential functions beyond academics: they provide socialization, basic welfare, and a structured environment, particularly for marginalized or vulnerable demographics. Completely deregulating education could arguably widen the gap between the privileged -who have the social and economic capital to self-direct their learning and the working class, who rely heavily on public infrastructure for upward mobility.

Despite these valid logistical critiques, the philosophical weight of Deschooling Society remains undeniable. It forces us to critically examine the system we are all actively participating in. Are we studying to acquire actual skills, wisdom, and a deeper understanding of human society, or are we simply jumping through institutional hoops to prove our employability? For students spending their most formative years chasing degrees, this book serves as a crucial wake-up call to take ownership of our intellectual journeys, rather than passively receiving whatever the syllabus dictates.

This is not just a book for educators or policy-

makers; it is a profound inquiry for anyone invested in understanding how social structures shape our minds. Whether you agree with his radical solutions or find them too extreme, Illich's critique will permanently alter the way you view the classroom. If you want to step back and question the very nature of the institutions that govern our lives, this slim but powerful volume is an absolute must-read.

****

अपनी जिम्मेदारी समझें युवा

सोफिया अंजुम,
एम.ए. द्वितीय सेमेस्टर, इतिहास

भारत युवाओं का देश है। विश्व की 65 फीसदी युवा आबादी हमारे देश में निवास करती है। ये युवा देश की राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक व्यवस्था के आधार स्तम्भ हैं। भारत एक विकसित देश बनने का संकल्प लेकर आगे बढ़ रहा है। इसमें अगर किसी की सबसे अधिक भूमिका होगी, तो वह भारत के युवाओं की ही होगी।

भारत के युवाओं को चाहिए कि वे अपनी क्रियाशीलता और ऊर्जा का इस तरह से उपयोग करें कि देश को आध्यात्मिक शक्ति के रुप में स्थापित करते हुए विश्व गुरु बनाने में अपना योगदान दें। दुनिया जानती है कि चीन ने अपनी युवा आबादी का मानव संसाधन के रूप में उपयोग करके अपने आपको दुनिया की महाशक्ति के रूप में स्थापित कर लिया है। इसी मानव संसाधन का उपयोग करके भारत आने वाले समय में एक विकसित देश के रूप में अपने आपको स्थापित करने में पूरी तरह से सक्षम होगा। भारतीय युवाओं को मौके मिलने चाहिए ताकि वे विदेशों में न जाकर अपने ही देश में नए स्टार्टअप की शुरुआत करें और रोजगार के नए अवसर पैदा करें।

यह कहना गलत नहीं होगा कि भारत के युवा भविष्य में दुनिया की दिशा तय करने में अहम भूमिका अदा करेंगे। आज के विद्यार्थियों को दुनिया एक उम्मीद भरी नज़रों से देख रही है। आने वाले समय में हमारे भारतवर्ष के युवा अपनी ऊर्जाशक्ति के माध्यम से इस उम्मीद को पूरा करेंगे।

****

विश्व स्वास्थ्य दिवस पर समाजशास्त्र परिषद ने आयोजित किया कार्यक्रम

दिनाँक 07.04.2026 को सरदार भगत सिंह राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रुद्रपुर में समाजशास्त्र विभागीय परिषद के तत्वाधान में 'विश्व स्वास्थ्य दिवस' के अवसर पर पोस्टर एवं भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत विभागीय परिषद की संयोजक डॉ. शिल्पी अग्रवाल द्वारा कार्यक्रम के विषय प्रवर्तन से हुई। डॉ. शिल्पी अग्रवाल ने विद्यार्थियों का आह्वान किया कि वे अपने आहार - विहार को लेकर सजग रहें। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे समाजशास्त्र विभाग के डॉ. राजेश कुमार सिंह ने इस अवसर पर उपस्थित विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए विद्यार्थियों को विश्व स्वास्थ्य दिवस के बारे में विस्तार से बताया। इस अवसर पर अर्थशास्त्र विभाग के डॉ. प्रद्युम्न कुमार रिछारिया ने विद्यार्थियों को स्वस्थ जीवन के लिए स्वस्थ आदतों के विकास पर बल दिया।

विश्व स्वास्थ्य दिवस के अवसर पर आयोजित भाषण प्रतियोगिता में बी.ए. षष्टम सेमेस्टर के नेपोलियन ने प्रथम, एम.ए. चतुर्थ सेमेस्टर की रश्मि तिवारी ने द्वितीय तथा एम.ए. चतुर्थ सेमेस्टर की पूजा रस्तोगी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। इसी प्रकार से पोस्टर प्रतियोगिता में एम.ए. द्वितीय सेमेस्टर के अमनदीप सिंह ने प्रथम तथा बी.ए.षष्टम सेमेस्टर की रंजना रावत ने द्वितीय तथा बी.ए. चतुर्थ सेमेस्टर की सर्वजीत कौर ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

इस कार्यक्रम में अर्थशास्त्र विभाग के डॉ.प्रद्युम्न कुमार रिछारिया तथा हिंदी विभाग की डॉ.सुमन फुलारा ने निर्णायक मण्डल की भूमिका निभाई। इस कार्यक्रम में समाजशास्त्र विषय की सालेहा खातून, अनामिका सिंह, नेहा, निकिता, सर्वजीत, अंशु, अर्चना अर्जुन, मनु शर्मा, दीक्षा, रोहन प्रीत और अन्य विद्यार्थी उपस्थित रहे। कार्यक्रम को सफल बनाने में महाविद्यालय के विद्यार्थी कैलाश चौधरी और आरती ने विशेष सहयोग दिया।

****

अर्थशास्त्र विभागीय परिषद द्वारा प्रतियोगिताओं का आयोजन

सरदार भगत सिंह राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रुद्रपुर के अर्थशास्त्र विभागीय परिषद द्वारा विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास एवं समसामयिक आर्थिक विषयों की गहन समझ विकसित करने के उद्देश्य से दिनाँक 08.04.26 को विविध प्रतियोगिताओं का सफल एवं प्रभावशाली आयोजन किया गया। कार्यक्रम में छात्र-छात्राओं ने अत्यंत उत्साह, रचनात्मकता एवं विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण का परिचय दिया। कार्यक्रम के अंतर्गत आयोजित पोस्टर, भाषण, निबंध एवं प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताओं ने वैश्विक एवं भारतीय अर्थव्यवस्था के महत्वपूर्ण मुद्दों को केंद्र में रखा। पोस्टर प्रतियोगिता का विषय "2026 में अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की व्यापार नीतियाँ एवं उनका भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव" रहा, जिसमें विद्यार्थियों ने अपनी सृजनात्मकता के माध्यम से जटिल आर्थिक अवधारणाओं को आकर्षक रूप में प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो.अवधेश नारायण सिंह ने की । इस कार्यक्रम में विभाग प्रभारी प्रो.शैलजा जोशी एवं प्रो.दीपा वर्मा, प्रो. अनीता चौरसिया, डॉ. राघवेंद्र मिश्रा, डॉ. शलभ गुप्ता, डॉ. राजेश कुमार मौर्य, डॉ. प्रद्युम्न कुमार रिछारिया, डॉ. विकार हसन खां, डॉ. सुनील कुमार मौर्य, डॉ. अंकिता चंदोला एवं डॉ. रवीश त्रिपाठी ने कार्यक्रम में मौजूद रहकर प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन किया।

इस अवसर पर आयोजित पोस्टर प्रतियोगिता में तरन्नुम ने प्रथम, करमन कौर ने द्वितीय एवं आरती ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। भाषण प्रतियोगिता में सोफिया अंजुम प्रथम, अफसा अंजुम द्वितीय एवं तरन्नुम तृतीय स्थान पर रहीं। प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में पूजा विश्वास ने प्रथम, करमन कौर ने द्वितीय एवं नैनिका सिंह ने तृतीय स्थान प्राप्त किया, जबकि निबंध प्रतियोगिता में निकिता ने प्रथम, तरन्नुम ने द्वितीय एवं अंशिका ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम के समापन अवसर पर प्राचार्य महोदय ने विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि इस प्रकार की गतिविधियाँ न केवल शैक्षणिक ज्ञान को सुदृढ़ करती हैं, बल्कि विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, तार्किक चिंतन एवं वैश्विक दृष्टिकोण का भी विकास करती हैं। कार्यक्रम के अंत में प्राचार्य प्रो. अवधेश नारायण सिंह ने सभी विजेताओं को पुरस्कृत किया तथा प्रतिभागियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की ।

‘प्रधानमंत्री इंटर्नशिप योजना’ पंजीकरण जागरूकता कार्यक्रम

दिनाँक 07 अप्रैल को सरदार भगत सिंह राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रुद्रपुर में युवाओं को सरकारी योजनाओं से जोड़कर उन्हें रोजगार के लिए सशक्त बनाने के उद्देश्य से,‘प्रधानमंत्री इंटर्नशिप योजना’ (PM Internship Scheme) के सम्बन्ध में एक जागरूकता बैठक का आयोजन किया गया। शासन के निर्देशानुसार आयोजित यह कार्यक्रम विशेष रूप से अंतिम वर्ष के छात्र-छात्राओं के लिए ‘प्रधानमंत्री इंटर्नशिप योजना’ (PM Internship Scheme) और इसकी प्रवेश पंजीकरण प्रक्रिया पर केंद्रित था।

इस कार्यक्रम का आयोजन बी.बी.ए. विभाग की असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. गरिमा जायसवाल चन्द्रा द्वारा किया गया। इस अवसर पर महाविद्यालय के प्राचार्य प्रोफेसर अवधेश नारायण सिंह ने छात्रों का उत्साहवर्धन किया। आपने कहा कि, आज के प्रतिस्पर्धी दौर में सिर्फ किताबी ज्ञान पर्याप्त नहीं है। विद्यार्थियों को सरकार द्वारा चलाई जा रही ‘प्रधानमंत्री इंटर्नशिप योजना’ जैसी पहलों से जुड़कर अपने कौशल का विकास करना चाहिए, जिससे भविष्य में रोजगार के बेहतरीन अवसर प्राप्त हो सकें। इस इंटरेक्टिव सेशन में विभिन्न संकायों के अंतिम वर्ष के 75 छात्र-छात्राओं ने पूरे उत्साह के साथ सहभागिता की।

इस कार्यक्रम में विशेषज्ञों द्वारा यह बताया गया कि ‘प्रधानमंत्री इंटर्नशिप योजना’ का मुख्य उद्देश्य युवाओं को व्यावहारिक कार्य अनुभव प्रदान करना है। कार्यक्रम में पोर्टल पर आवेदन करने की प्रक्रिया के बारे में तथा छात्रों को पंजीकरण के दौरान आने वाली तकनीकी समस्याओं के समाधान के लिए आवश्यक मार्गदर्शन भी प्रदान किया गया।

****

इतिहास विभाग के तत्वाधान में
फिल्म 'तेरा ही रहना' के लिए ऑडिशन का आयोजन

दिनाँक 6 अप्रैल को स.भ.रा. स्ना. महाविद्यालय, रूद्रपुर के इतिहास विभाग के तत्वावधान में दिवित फिल्म्स के बैनर तले बन रही फिल्म 'तेरा ही रहना, के लिए छात्र-छात्राओं के लिएऑडिशन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ महाविद्यालय के प्राचार्य द्वारा प्रेरणादायी संबोधन के साथ हुआ उन्होंने विद्यार्थियों को रचनात्मक गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित करते हुए कहा कि ऐसे मंच युवाओं के व्यक्तित्व विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

कार्यक्रम की संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष ने अपने सम्बोधन में कहा कि इस प्रकार के आयोजन छात्रों की छिपी प्रतिभाओं को निखारने का प्रभावी माध्यम हैं और उन्हें भविष्य में नए अवसर प्रदान करते हैं। फिल्म के प्रोड्यूसर तुषार ने बताया कि "तेरा ही रहना" एक युवा-केंद्रित फिल्म है, जिसमें नई प्रतिभाओं को आगे लाने का प्रयास किया जा रहा है। फिल्म का मुख्य उद्देश्य नई और स्थानीय प्रतिभाओं को एक बड़ा मंच प्रदान करना और उन्हें आगे लाना है। ऑडिशन के दौरान बड़ी संख्या में छात्र-छात्राओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और अभिनय, संवाद अदायगी और अपनी कलात्मक प्रतिभा का प्रदर्शन किया। चयन प्रक्रिया में विद्यार्थियों के आत्मविश्वास और पात्र के अनुसार उनके भावों को परखा गया। इस आयोजन से महाविद्यालय के छात्रों में खासा उत्साह देखने को मिला, क्योंकि उन्हें अपने ही परिसर में फिल्मी दुनिया से जुड़ने का एक सुनहरा मौका प्राप्त हुआ।

****

इतिहास विभाग के तत्वाधान में डॉ.अम्बेडकर पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन

दिनाँक 13 अप्रैल को सरदार भगत सिंह राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रुद्रपुर के इतिहास विभाग द्वारा "Reimagining Indian Democracy: Constitutional Vision of Dr. B.R. Ambedkar" विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह कार्यशाला अजीम प्रेमजी फाउंडेशन रुद्रपुर के सहयोग से आयोजित की गई। इस कार्यशाला में महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं, शोधार्थियों एवं प्राध्यापकों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की।

कार्यशाला का उद्देश्य भारतीय लोकतंत्र की मूल अवधारणाओं को पुनः समझना तथा डॉ.भीमराव अंबेडकर के संवैधानिक दृष्टिकोण को समकालीन संदर्भों में विश्लेषित करना रहा। महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. अवधेश नारायण सिंह ने अपने सम्बोधन में कहा कि डॉ. अंबेडकर का संविधान केवल एक कानूनी दस्तावेज नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय, समानता और लोकतांत्रिक मूल्यों का जीवंत मार्गदर्शक है।

इतिहास विभागाध्यक्ष एवम कार्यशाला की संयोजक डॉ. अपर्णा सिंह ने कहा कि भारतीय लोकतंत्र को समझने के लिए डॉ. अंबेडकर की वैचारिकी को गहराई से जानना अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने कहा कि यह कार्यशाला विद्यार्थियों को आलोचनात्मक चिंतन, संवैधानिक मूल्यों की समझ और समसामयिक मुद्दों पर दृष्टि विकसित करने में सहायक सिद्ध होगी। अजीम प्रेमजी फाउंडेशन से आए मुख्य वक्ता भास्कर उप्रेती ने अपने व्याख्यान में डॉ. अंबेडकर के संवैधानिक दर्शन को विस्तार से प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि अंबेडकर ने भारतीय समाज की विविधता का ध्यान रखते हुए एक समावेशी संविधान की रचना की, जिसमें समान अवसर, स्वतंत्रता और सामाजिक न्याय को प्रमुख स्थान दिया गया है। कार्यक्रम का संचालन डॉ. प्रमोद जोशी द्वारा तथा धन्यवाद ज्ञापन कार्यशाला के आयोजक सचिव डॉ. रवीश त्रिपाठी ने किया।

****

"सत्य एवं सौन्दर्य की साधना से शिव की साधना स्वयं हो जाती है।"
प्रो. विश्वनाथ खाली, उच्च शिक्षा निदेशक

दिनाँक 11 अप्रैल को सरदार भगत सिंह राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रुद्रपुर के अंग्रेजी विभाग की विभागीय परिषद के तत्वाधान में "Satya, Shiv and Saundarya in the Poetry of John Keats" विषय पर एक आमंत्रित व्याख्यान का आयोजन किया गया।

इस आयोजन में मुख्य अतिथि और आमंत्रित वक्ता के रूप में उच्च शिक्षा निदेशक प्रो. विश्वनाथ खाली ने उक्त विषय पर अपना व्याख्यान दिया। प्रो. विश्वनाथ खाली ने कहा कि जॉन कीट्स की कविता सौंदर्य एवं सत्य के इर्द-गिर्द घूमती है। आपने कहा कि जो सत्य और सौंदर्य की साधना करता है, वह जनकल्याण या शिव की भी साधना कर लेता है। प्रोफेसर खाली ने कहा कि दुनिया के प्रत्येक साहित्य में कुछ ऐसे नायाब हीरे हुए हैं, जो लम्बी आयु न पाने के बाद भी साहित्य को समृद्ध कर गए हैं। अंग्रेजी साहित्य में जॉन कीट्स, हिंदी साहित्य में गजानन माधव मुक्तिबोध एवं गढ़वाली साहित्य में चंद्रकुँवर बर्तवाल, ऐसी ही विलक्षण प्रतिभा के धनी रहे हैं।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. अवधेश नारायण सिंह ने उच्च शिक्षा निदेशक प्रो. विश्वनाथ खाली का स्वागत किया। इस अवसर पर अपने उद्बोधन के माध्यम से प्राचार्य महोदय ने महाविद्यालय की उपलब्धियों और समस्याओं से उच्च शिक्षा निदेशक को अवगत कराया। कार्यक्रम का संचालन अंग्रेजी विभाग प्रभारी प्रो.मनोज कुमार पाण्डेय ने किया।

****

भौतिक विज्ञान परिषद के
तत्वाधान में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन

भौतिक विज्ञान विभागीय परिषद द्वारा दिनाँक 17.04.2026 को विभिन्न शैक्षणिक एवं वैज्ञानिक गतिविधियों का सफल आयोजन किया गया। कार्यक्रम के अन्तर्गत विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिनमें मुख्य रुप से निबन्ध, पोस्टर, क्विज एवं आशुलेखन प्रतियोगिताएं शामिल थी। इस कार्यक्रम में छात्र-छात्राओं ने प्रतिभाग कर अपनी रचनात्मकता व वैज्ञानिक दृष्टिकोण का उत्कृष्ट प्रदर्शन दिया।

पोस्टर प्रतियोगिता में एम.एससी. चतुर्थ सेमेस्टर के संतोष कुमार ने प्रथम स्थान, इसी कक्षा की सिमरजीत कौर ने द्वितीय स्थान तथा बी.एससी. षष्ठम सेमेस्टर की निहारिका सिंह ने तृतीय स्थान प्राप्तकिया। निबन्ध प्रतियोगिता में बी.एससी. चतुर्थ सेमेस्टर की कशिश बिष्ट ने प्रथम स्थान, इसी कक्षा के राहुल सिंह बिष्ट ने द्वितीय स्थान तथा बी.एससी. षष्ठम सेमेस्टर की सेजल ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। क्विज प्रति-योगिता में बी.एससी. षष्ठम सेमेस्टर की सेजल एवं अभय शर्मा ने प्रथम स्थान, बी.एससी. षष्ठम सेमेस्टर के मोहित कुमार एवं कोमल जोशी ने द्वितीय स्थान तथा एम.एससी. द्वितीय सेमेस्टर की निधि गंगवार एवं पल्लवी ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। आशुलेखन प्रतियागिता में बी.एससी. षष्ठम सेमेस्टर के आयुष बिष्ट ने प्रथम स्थान, बी.ए.षष्ठम सेमेस्टर के नितिन पुनेठा ने द्वितीय तथा बी.एससी. चतुर्थ सेमेस्टर की कोमल जोशी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। विजयी प्रतिभागियों को महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो.अवधेश नारायण सिंह ने ट्रॉफी देकर सम्मानित किया।

इस कार्यक्रम में डॉ. गायत्री काण्डपाल द्वारा मंच संचालन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता विभाग प्रभारी डॉ. विकास दुबे द्वारा की गई। क्विज प्रतियोगिता का संचालन स्नातकोत्तर के विद्यार्थियों शीतल सिंह एवं आकाश सिंह अधिकारी द्वारा किया गया। विभागीय परिषद के अध्यक्ष सचिन राजपूत एवं सचिव मानस टम्टा ने कार्यक्रम को सफल बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। समाजशास्त्र विभाग प्रभारी प्रो. हेमलता सैनी, गणित विभाग के डॉ. राधवेन्द्र मिश्रा एवं जन्तु विज्ञान विभाग के डॉ. रवीश त्रिपाठी द्वारा इन प्रतियोगिताओं में निर्णायक मण्डल की भूमिका निभाई गई।

कार्यक्रम के संयोजक डॉ. हेम पाण्डे व सह संयोजक डॉ. नेहा अरोरा तथा तकनीकी सहायक के रुप में प्रयोगशाला कार्मिक श्री.डी. के.जोशी, श्री चन्द्र प्रकाश एवं श्री लक्ष्मण सिंह रावत ने कार्यक्रम को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

****

रक्तदान शिविर में 40 यूनिट रक्त एकत्रित

दिनांक 16 अप्रैल 2026 को सरदार भगत सिंह राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रुद्रपुर में रेड क्रॉस, एन.एस.एस., एन.सी.सी. और रोवर्स रेंजर्स के सहयोग से एक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लेते हुए मानव सेवा का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया। इस रक्तदान शिविर में कुल 40 यूनिट रक्त एकत्रित किया गया ।

कार्यक्रम का संचालन रेड क्रॉस के प्रभारी डॉ. राजेश कुमार सिंह एवं राष्ट्रीय सेवा योजना के प्रभारी डॉ. चंद्रपाल के नेतृत्व में किया गया। इस शिविर का शुभारम्भ महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. अवधेश नारायण सिंह की उपस्थिति में समाजशास्त्र विभाग प्रभारी प्रो. हेमलता सैनी एवं प्रो. रवीन्द्र कुमार सैनी द्वारा रक्तदान से हुई। इसके पश्चात बड़ी संख्या में विद्यार्थियों ने आगे आकर रक्तदान किया और समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाई।

रक्तदान शिविर में पहुँच कर स्वयंसेवियों का उत्साहवर्धन करते क्षेत्रीय विधायक श्री शिव अरोरा

इस अवसर पर क्षेत्र के विधायक शिव अरोरा भी रक्तदान शिविर में पहुंचे और छात्रों के इस सराहनीय कार्य की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि रक्तदान सबसे बड़ा दान है और इससे अनेक जरूरतमंद लोगों का जीवन बचाया जा सकता है।

इस रक्तदान शिविर को सफल बनाने में महाविद्यालय के भौतिक विज्ञान के प्रो. विकास दुबे तथा बी.बी.ए. के डॉ. निशांत सिंह एवं यूथ रेड क्रॉस समिति के सक्रिय स्वयंसेवी नेपोलियन, पूजा रस्तोगी, रश्मि तिवारी, साजिया, सावीन जहाँ, सालेहा खातून, गौरी सिंह एवं प्रीति मेहरा तथा छात्र संघ सचिव जसवंत सिंह एवं अध्यक्ष रजत बिष्ट का विशेष योगदान रहा।

इस रक्तदान शिविर में जिला चिकित्सालय के रक्त केंद्र के प्रभारी श्री जे.एल.चौधरी, डॉ. दिव्यता चान्याल पैथोलॉजिस्ट, जितेंद्र सिंह एवं सतीश यादव लैब तकनीशियन, विवेक चौहान काउंसलर, श्रीमती पिंकी बोरा, नर्सिंग अधिकारी, अनिल कुमार, लैब सहायक की टीम ने रक्तदान कार्यक्रम में अपनी भूमिका निभाई । शिविर के दौरान जिला चिकित्सालय के स्वास्थ्य कर्मियों द्वारा सभी आवश्यक सावधानियों का पालन किया गया। कार्यक्रम का समापन सफलतापूर्वक हुआ और आयोजकों ने सभी रक्तदाताओं का आभार व्यक्त किया।

****

तस्वीरों में रक्तदान शिविर

देवभूमि उद्यमिता योजना के अंतर्गत तीन दिवसीय ओरियंटेशन कार्यक्रम का आयोजन

उच्च शिक्षा विभाग, उत्तराखण्ड सरकार एवं भारतीय उद्यमिता विकास संस्थान(Entrepreneurship Development Institute of India) के संयुक्त तत्वावधान में सरदार भगत सिंह राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय में संचालित देवभूमि उद्यमिता योजना के अंतर्गत दिनाँक 22 से 24 अप्रैल तक, तीन दिवसीय ओरिएंटेशन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। तीन दिनों तक चले इस कार्यक्रम में कुल 360 विद्यार्थियों ने प्रतिभाग किया।

इस कार्यक्रम का आयोजन विद्यार्थियों में उद्यमिता की संस्कृति को बढ़ावा देने उन्हें नवाचार पर आधारित स्वरोजगार के मौके तलाशने की प्रवृत्ति विकसित करने के लिए किया गया। इस पहल का उद्देश्य विद्यार्थियों को उद्यमिता से जुड़ी जरूरी जानकारी, व्यावहारिक ज्ञान और सरकारी समर्थन के बारे में जागरूक करते हुए उन्हें नौकरी चाहने वाले की जगह, नौकरी के अवसर निर्मित करने वाला बनाना था। इसके अतिरिक्त विद्यार्थियों में उद्यमिता की सोच विकसित करना, स्टार्टअप इकोसिस्टम और नवाचार के मौकों के बारे में जागरूकता पैदा करने, विद्यार्थियों को स्वरोजगार और उद्यम विकास के तरीकों से परिचित कराने, व्यापारिक योजना, उत्पाद विकास तथा बाजार के मौकों के बारे में जानकारी देना, देवभूमि उद्यमिता योजना के तहत मिलने वाली आर्थिक मदद से विद्यार्थियों को परिचित कराना इस कार्यक्रम के प्रमुख उद्देश्य थे।

इस कार्यक्रम में महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. अवधेश नारायण सिंह ने प्रतिभागियों को नवाचार आधारित उद्यमिता को अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया। आपने कौशल विकास और उद्यम सृजन के माध्यम से एक

आत्मनिर्भर उत्तराखण्ड बनाने में युवाओं की अहम भूमिका पर जोर दिया। इस तीन दिवसीय ओरियंटेशन कार्यक्रम के विषय विशेषज्ञ डॉ.रजत शर्मा ने स्टार्टअप शुरू करने के तरीके, नवाचार के तरीके, उद्यमिता के मौके और देवभूमि उद्यमिता योजना के तहत उपलब्ध इंस्टीट्यूशनल सपोर्ट सिस्टम के बारे में विस्तार से बताया।

यह तीन दिवसीय ओरियंटेशन कार्यक्रम महाविद्यालय की उद्यमिता विकास योजना की नोडल ऑफिसर डॉ. गरिमा जायसवाल के नेतृत्व में संचालित किया गया। इस कार्यक्रम में महाविद्यालय के वाणिज्य, विज्ञान और कला संकाय के विद्यार्थियों ने पूरे उत्साह के साथ हिस्सा लिया।

****

कैम्पस क्रॉनिकल: समाचार संक्षेप में

- महाविद्यालय में कैरियर काउंसलिंग व प्लेसमेंट सेल के तत्वावधान में रिक्रूटमेंट ड्राइव का आयोजन किया गया। इसमें एनआईआईटी-आईएफबीआई के माध्यम से एचडीएफसी, एस बैंकर प्रोग्राम एवं एक्सिस बैंक में उपलब्ध कैरियर अवसरों की विस्तृत जानकारी दी गई। वरिष्ठ परामर्शदाता आशुतोष शुक्ला ने छात्रों को बैंकिंग क्षेत्र की चयन प्रक्रिया, परीक्षा पैटर्न व कार्यप्रोफाइल के बारे में विस्तार से अवगत कराया। रिक्रूटमेंट ड्राइव में महाविद्यालय के कुल 152 छात्र-छात्राओं ने आवेदन किया। इनमें से 15 अभ्यर्थियों का चयन ऑनलाइन परीक्षा, साक्षात्कार व व्यक्तित्व परीक्षण के लिए किया गया। कार्यक्रम में देवभूमि ग्लोबल सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड के निदेशक कमलेश जोशी, रजनीश कुमार, टीम सदस्य वंदना रावत व साक्षी की महत्वपूर्ण भूमिका रही।
- दिनाँक 09 अप्रैल को वरिष्ठ शोध अध्येता के रूप में उन्नयन के लिए राजनीति विभाग में साक्षात्कार का आयोजन किया गया। इस साक्षात्कार हेतु राधे हरि राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, काशीपुर के प्रो. आदित्य प्रकाश सिंह ने विषय विशेषज्ञ के रूप में सहभागिता की। इस साक्षात्कार के द्वारा प्रो. सर्वजीत सिंह के निर्देशन में शोधरत राजनीति विज्ञान विभाग के शोधार्थी क्षितिज भट्ट और अमित बुटोला का वरिष्ठ शोध अध्येता के रूप में उन्नयन किया गया।
- दिनाँक 25 अप्रैल को वरिष्ठ शोध अध्येता के रूप में उन्नयन के लिए राजनीति विभाग में साक्षात्कार का आयोजन किया गया। इस साक्षात्कार हेतु प्रो. आर. एस.भाकुनी तथा प्रो.कैलाश चन्द्र कालोनी ने विषय विशेषज्ञ के रूप में सहभागिता की। इस साक्षात्कार के द्वारा प्रो. आशा राणा के निर्देशन में शोधरत राजनीति विज्ञान विभाग के शोधार्थी निकिता सिंह और तब्बू मर्तोलिया का वरिष्ठ शोध अध्येता के रूप में उन्नयन किया गया।

- माय भारत बजट क्वेस्ट 2026 में दो चरणों में आयोजित हुई प्रतियोगिता में क्विज और निबंध प्रतियोगिता में चयनित होकर महाविद्यालय की एम.एससी. चतुर्थ सेमेस्टर की छात्रा गदरपुर की तनीशा चावला ने दिल्ली में आयोजित बजट संवाद 2026 कार्यक्रम में उत्तराखण्ड और जनपद ऊधम सिंह नगर का प्रतिनिधित्व किया। इस कार्यक्रम में केंद्रीय मंत्री डॉ. मनसुख मंडावीया ने वर्चुअल रूप से चयनित युवाओं के साथ संवाद किया। इस कार्यक्रम में युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय भारत सरकार की केंद्रीय राज्य मंत्री रक्षा निखिल खड़से ने अपने अनुभव साँझा कर चयनित युवाओं का मार्गदर्शन किया ।

****